ॐ स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प – जीवन विज्ञान : आचार्य महाप्रज्ञ, जीवन विज्ञान प्रणेता ॐ

Jeevan Vigyan (Science of Living)
e-Newsletter

Volume : 3; Number : 02
Editor
Hanuman Mal Sharma

जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज संरचना का संकल्प

स्वस्थ समाज संरचना की दिशा में यदि समाज को स्वच्छ और अच्छा बनाना है, व्यसनमुक्त और अपराध मुक्त बनाना है तो शिक्षा के साथ संवेग–परिष्कार की बात को जोड़ना होगा। इसके सिवाय कोई विकल्प नहीं है। आज का विद्यार्थी पच्चीस वर्ष तक पूरी उच्छृंखलता में पनपता है। जब वह समाज में आता है तो उसकी अपराधी मनोवृत्ति से समाज के लोग चिन्तित हो जाते हैं। केवल बौद्धिक विकास के कारण से विद्यार्थी शस्त्र–से बन जाते हैं। धार तेज है। जब धार तेज होगी तो वह काटेगी ही। जब शस्त्र तेज होगा तो वह अपना काम करेगा ही। एक बात है, शस्त्र बने, धार तेज हो,, कोई चिन्ता नहीं है पर उस पर खोल होना चाहिए। खड्ग हो और म्यान न हो तो वह स्वयं को ही काट देता है। बौद्धिक विकास बहुत जरूरी है, पर वह काटे नहीं। नैतिकता का उस पर खोल रहे, नियंत्रण की क्षमता बढ़े। इस संतुलन की हम कल्पना करें। जीवन विज्ञान से शिक्षा–क्षेत्र का क्षेत्र तेजस्वी बनेगा और नये व्यक्तियों का निर्माण होगा। – **आचार्य महाप्रज्ञ।**

जीवन विज्ञान चिन्तनगोष्ठी का आयोजन

देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत समस्त जीवन विज्ञान अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं को एक संगठनात्मक रूप प्रदान करने, क्षेत्रीय स्तर पर जीवन विज्ञान प्रशिक्षण के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों, बाधाओं एवं उनके समाधान पर चिन्तन, क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं की अपेक्षाओं, आवश्यकताओं के सन्दर्भ में चिन्तन तथा प्रशिक्षण की एकरूपता एवं प्रारूप पर विचार विमर्श की दृष्टि से जीवन विज्ञान अकादमी, जैन विश्व भारती, लाडनूँ द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी के निर्देशन में 20 फरवरी, 2011 को अहिंसा भवन में एक चिन्तन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अकादमी के संयोजक डॉ. सूरजमल सुराणा ने की। इस गोष्ठी में श्री मर्यादा कुमार कोठारी, (ते.वि.प.) प्रो. (डॉ.) सोहनराज तातेड़, डॉ. जी. एल. जैन, डॉ. महावीर गोलेच्छा (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली) श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, डॉ. बी.पी.गौड़, श्री सुरेन्द्र कुमार मित्तल, श्री एन.सी. जैन, श्री मूलचन्द नाहर, श्री रमेश बोहरा, श्री दानमल पोरवाल, श्री प्यारचन्द मेहता, श्री दक्षदेव गौड़, आदि 26 गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लेकर जीवन विज्ञान के व्यापक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से गहन चिन्तन–मंथन किया। विस्तार से विचार विमर्श के बाद सर्व सम्मति से निर्णय हुआ कि –

1. देश के विभिन्न भागों में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों का एक सुनियोजित संगठन बनाया जाये और ये सभी अकादमियां जीवन विज्ञान अकादमी, केन्द्रीय कार्यालय, जैन विश्व भारती को केन्द्र से प्राप्त रीति–नीति अनुसार जीवन विज्ञान के प्रचार –प्रसार का कार्य करें।
2. जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूँ से समय–समय पर इस हेतु जीवन विज्ञान अकादमियों को दिशा–निर्देश प्रदान किये जायेंगे

क्रमशः...

अन्तर्राष्ट्रीय जीवन विज्ञान शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के निर्माणाधीन भवन में पावन पगलिया

लाडनूँ 20 फरवरी 2011। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महत्ती कृपा करते हुए अपने प्रातःकालीन भ्रमण के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय जीवन विज्ञान शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान के निर्माणाधीन भवन में पादार्पण किया और निर्माण कार्य का अवलोकन कर मंगलपाठ सुनाया। प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी ने आचार्यप्रवर को शोध संस्थान के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। ध्यातव्य है कि यह भवन श्री दिलीप सुराणा (माइक्रो लैब्स), मूलचन्द देवराज नाहर चेरीटेबल ट्रस्ट, बैंगलोर तथा कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के सौजन्य से निर्मित्त किया जा रहा है। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया, मंत्री श्री जितेन्द्र नाहटा, कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष श्री मूलचन्द नाहर, मंत्री श्री ललित जैन, श्री सुरेश जैन (आर्किटेक्ट), श्री सुरेन्द्र जैन (कन्ट्राक्टर) एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

धर्म नहीं चिन्ता करता, परलोक बने सुखदाई।
उसको चिन्ता जीवन में, कितनी पवित्रता आई।।
– आचार्यश्री महाप्रज्ञ

क्रमशः...जिनकी अनुपालना सभी जीवन विज्ञान अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं को करते हुए केन्द्रीय कार्यालय द्वारा निर्धारित रीति–नीति एवं नियमोपनियमों को स्वीकार करना होगा।

3. प्रशिक्षण की गुणवत्ता एवं प्रशिक्षकों की कमी को देखते हुए जीवन विज्ञान के श्रेष्ठ प्रशिक्षक तैयार करने हेतु केन्द्र के निर्देशानुसार एक प्रशिक्षण कार्ययोजना बनाकर जीवन विज्ञान शिक्षक, जीवन विज्ञान प्रशिक्षक, वरिष्ठ प्रशिक्षक एवं जीवन विज्ञान प्रवक्ता के पाठ्यक्रम का निर्धारण कर प्रशिक्षण एवं सैद्धान्तिक–प्रायोगिक परीक्षा पश्चात उन्हें प्रमाण–पत्र प्रदान कर जीवन विज्ञान को गति दी जाये।
4. वर्तमान में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों से उनके कार्यों की त्रैमासिक रिपोर्ट प्राप्त कर श्रेष्ठ कार्य करने वाली अकादमी को प्रोत्साहित किया जाये।
5. श्रेष्ठ प्रशिक्षकों की पहचान कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाये।
6. जीवन विज्ञान अकादमी के केन्द्रीय कार्यालय को स्वायत्ता प्रदान कर और अधिक सक्षम एवं सक्रिय बनाया जाये।

तनाव मुक्ति (कैप्शूल)

1. तनाव विश्व की ज्वलंत समस्या है। विद्यार्थी, अध्यापक, अभिभावक तीनों इस समस्या से ग्रस्त हैं। तनाव को अंग्रेजी में टेन्शन कहा जाता है। बार–बार मन और मस्तिष्क पर किसी विषय का दबाव पड़ता है तब तनाव का रूप ले लेता है। तनाव को कायोत्सर्ग द्वारा दूर कर दिया जाये तो वह अवसाद का रूप धारण नहीं करता है। जब कभी थकान अथवा किसी कार्य का भार अनुभव हो तो उसे विश्राम योग द्वारा दूर किया जा सकता है।
2. विश्राम योग – दोनों हाथों की अंगुलियों को एक–दूसरे में फसा कर सामने खींचाव दें और शरीर को शिथिल छोड़ दें। तीन बार ऐसा करने से तनाव दूर होता है।
3. पूर्ण तनाव को दूर करने के लिये कायोत्सर्ग अच्छी प्रक्रिया है। कायोत्सर्ग तीन तरह से किया जाता है। खड़े रहकर, बैठकर और लेटकर।
4. दोनों हाथों की अंगुलियों को एक–दूसरे में फसा कर ताड़ासन में तनाव दें। लेट कर करते हैं तब सुप्त ताड़ासन में तनाव देकर शरीर को शिथिल छोड़ दें। फिर मन ही मन प्रत्येक अवयव को मानसिक सुझाव दें – शरीर का एक–एक अवयव शिथिल हो जाये। शिथिलता का अनुभव करें और शरीर को पूरी तरह शिथिल छोड़ दें और तनावमुक्त हो जायें।

इरोड़ में जीवन विज्ञान सेमीनार का आयोजन

इरोड़ 27 फरवरी,11। जीवन विज्ञान अकादमी, ईरोड़ द्वारा 27 फरवरी को जीवन विज्ञान की प्रारम्भिक जानकारी हेतु एक जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें इरोड़ एवं सीमावर्ती क्षेत्रों की लगभग 60 शिक्षण संस्थाओं के ट्रस्टी, व्यवस्थापक, प्राचार्य एवं शिक्षकों ने भाग लेकर जीवन विज्ञान का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। चैन्नई से समागत कुशल प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में जीवन विज्ञान की भूमिका को प्रतिपादित करते हुए इसकी 12 इकाईयों का पॉवर प्वाइंट के माध्यम से प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रयोगों की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में समागत सभी संभागियों ने विषय के प्रति रूचि दिखाते हुए मैंनेजमेन्ट से बात करके इसे अपने–अपने स्कूलों में लागू करने का आश्वासन दिया। अकादमी द्वारा इस कार्यशाला से पूर्व 3 दिस.10 को इंडियन पब्लिक स्कूल में भी एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया जिसमें 30 शिक्षकों एवं 700 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसी क्रम में 26 जनवरी 11 को अकादमी द्वारा आयोजित जी.वि. सेमीनार में इरोड़ के 32 प्रमुख हा.सैकण्डरी स्कूल एवं 180 प्राइमरी एवं नर्सरी स्कूलों के ट्रस्टी एवं व्यवस्थापक ने भाग लिया था।

कार्यशाला के सफल आयोजन का श्रेय तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मण्डल एवं जीवन विज्ञान अकादमी के समस्त कार्यकर्ताओं को देते हुए अकादमी के मंत्री हनुमानमल दूगड़ एवं अध्यक्ष रमेश पटावरी ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर हीरालाल चौपड़ा, भारती डागा एवं अवीता बाबेल सहित अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

जीवन विज्ञान पुरस्कार वितरण समारोह

लाडनूँ 20 फरवरी 2011। जैन विश्व भारती, लाडनूँ एवं नाहटा चेरीटेबल ट्रस्ट कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को जैन विश्व भारती परिसर स्थित सुधर्मा सभा में जीवन विज्ञान पुरस्कार समर्पण समारोह आयोजित किया गया। वर्ष 2010 का यह जीवन विज्ञान पुरस्कार कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी, बैंगलोर को प्रदान किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाश्रमणजी ने कहा कि भौतिक विकास के साथ भावात्मक विकास के लिये जीवन विज्ञान जरूरी है। जीवन विज्ञान एक मार्ग है जिससे हम अपने जीवन को श्रेष्ठ–सुन्दर एवं व्यावहारिक बना सकते हैं। उन्होंने फरमाया कि अच्छा कार्य करने वालों के लिये पुरस्कार मात्र एक प्रोत्साहन है, यह अन्यों के लिये प्रेरणा बनें जिससे वे भी इस तरह अच्छा कार्य करें। जी.वि. प्रभारी मुनि किशनलाल ने इस अवसर पर कहा कि विद्यार्थी राष्ट्र की नींव है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी ने इस पर चिन्तन करते हुए कर्नाटक राज्य सरकार के सहयोग से जीवन विज्ञान विषय को समस्त विद्यालयों में संचालित करने का निवेदन किया। कर्नाटक सरकार ने उनके इस सकारात्मक चिन्तन पर अमल करते हुए इसे वहां के पाठ्यक्रम में शामिल कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि यह बहुत बड़ा कार्य हुआ है, जिसमें कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के प्रयास महत्वपूर्ण एवं अनुकरणीय हैं। कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष श्री मूलचन्द नाहर एवं अकादमी पदाधिकारियों को जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष सुमेरमल सुराणा ने प्रतीक चिन्ह एवं नाहटा चेरीटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी सागरमल नाहटा ने पुरस्कार राशि एक लाख रुपये का चेक भेंट किया। पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात अकादमी के मंत्री ललित जैन ने कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य प्रवर की कृपा दृष्टि से ही यह कार्य संभव हो सका है। अकादमी के अध्यक्ष मूलचन्द नाहर ने पुरस्कार स्वरूप मिली राशि में इक्कीस हजार की राशि मिलाते हुए कुल एक लाख इक्कीस हजार रुपये की राशि जीवन विज्ञान प्रसार हेतु जैन विश्व भारती को समर्पित कर कर दी। जीवन विज्ञान अकादमी के संयोजक डॉ. सूरजमल सुराणा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर देशभर में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों के अनेक अधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन वंदना कुण्डलिया ने किया।

प्री–स्टार छोटी खाटू में जीवन विज्ञान कार्यशाला

छोटी खाटू 27 फरवरी। आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन पदार्पण के उपलक्ष में प्री–स्टार पब्लिक स्कूल में दिनांक 26, 27 फरवरी को प्रेक्षा प्राध यापक मुनिश्री किशनलालजी के निर्देशन में जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के 12 शिक्षकों एवं 192 विद्यार्थियों ने भाग लेकर प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर मुनिश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि जीवन विज्ञान जीने का व्यवस्थित ज्ञान है। प्रशिक्षण कार्य में महेन्द्र कुमावत एवं गिरजाशंकर दुबे का महत्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

दौलतगढ़ में जीवन विज्ञान प्रेक्षाध्यान कार्यशाला

दिनांक 25 से 27 फरवरी, 2011 को आचार्यश्री तुलसी उच्च प्राथमिक विद्यालय, दौलतगढ़ में जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन साध वीश्री विद्यावती जी के पावन सान्निध्य में किया गया, जिसमें आदर्श विद्या मंदिर एवं तुलसी उच्च प्राथमिक विद्यालय के 12 शिक्षकों एवं 170 छात्रों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी प्रकार दौलतगढ़ श्रावक समाज हेतु स्थानीय तेरापंथ भवन में प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन भी हुआ जिसमें प्रातः एवं सायंकालीन सत्रों में लगभग 40 भाई–बहनों ने भाग लिया। प्रशिक्षक हनुमान मल शर्मा ने का सहयोग प्राप्त हुआ। व्यवस्थाओं में स्थानीय जैन श्वे.ते. सभा, तेयुप, तेमम, कन्या मण्डल एवं सम्पत नौलखा का सहयोग महत्वपूर्ण रहा।